संस्कृति और सभ्यता

एक दार्शनिक यात्रा: भदंत आनंद कौसल्यायन के निबंध पर आधारित

NotebookLM

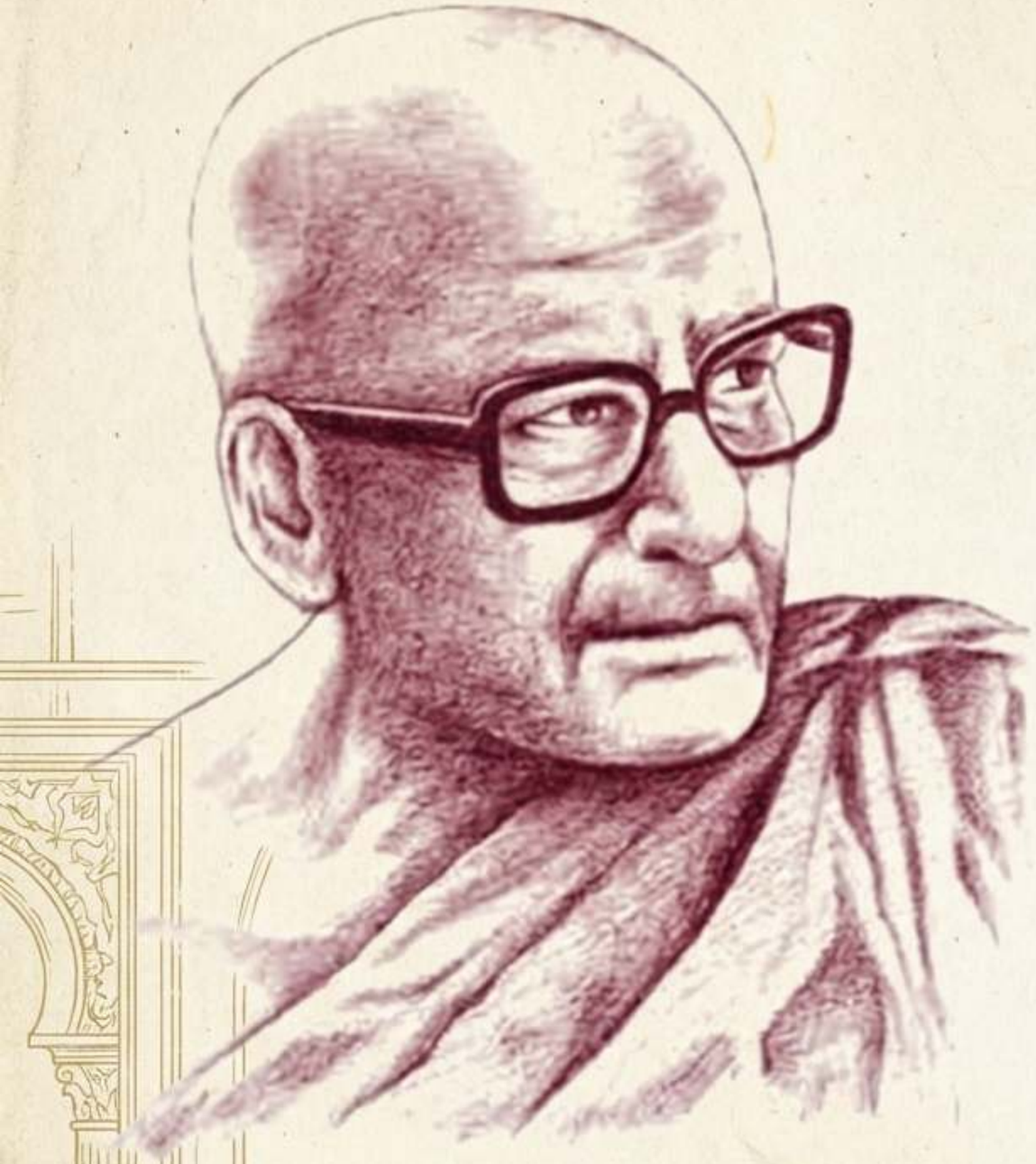

लेखक परिचय: भदंत आनंद कौसल्यायन

जन्म: १९०५, अंबाला

पहचान: प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु, हिंदी सेवी और गांधीजी के सहयोगी।

व्यक्तित्व: उन्होंने देश-विदेश की व्यापक यात्राएं कीं और बौद्ध धर्म के प्रचार में जीवन समर्पित किया। उनके लेखन में अनुभव की व्यापकता और सृजनात्मकता का अनूठा संगम है।

NotebookLM

सबसे अधिक प्रयोग, सबसे कम समझ

‘सभ्यता’ और ‘संस्कृति’—ये दो ऐसे शब्द हैं जिनका उपयोग सबसे अधिक होता है, लेकिन समझ सबसे कम।

जब हम इनके साथ विशेषण जोड़ देते हैं—जैसे ‘भौतिक-सभ्यता’ या ‘आध्यात्मिक-सभ्यता’—तो अर्थ और भी उलझ जाता है। आखिर ये एक ही वस्तु हैं या अलग-अलग?

NotebookLM

अविष्कार की पहली चिंगारी

कल्पना कीजिए उस समय की जब मानव का अग्नि देवता से साक्षात नहीं हुआ था।

“जिस आदमी ने पहली बार आग का अविष्कार किया होगा, वह कितना बड़ा अविष्कारक (genius) रहा होगा!”

NotebookLM

जब मानव को सुई-धागे का परिचय नहीं था, तब जिस मनुष्य के दिमाग में यह बात आई होगी कि लोहे के एक टुकड़े को घिसकर, छेद बनाकर, धागा पिरोकर कपड़े जोड़े जा सकते हैं...

सुई-धागे का परिचय

वह भी कितना बड़ा अविष्कारक रहा होगा!

NotebookLM

भेद: शक्ति और परिणाम

संस्कृति
(Culture)

वह योग्यता, प्रवृत्ति या प्रेरणा जिसके बल पर किसी नई चीज का अविष्कार होता है।

सभ्यता
(Civilization)

संस्कृति द्वारा जो अविष्कार हुआ, जो चीज उसने अपने और दूसरों के लिए बनाई।

संस्कृति 'बीज' है,
सभ्यता 'फल' है।

NotebookLM

न्यूटन और उसका विद्यार्थी

न्यूटन (संस्कृत मानव):
उसने गुरुत्वाकर्षण (Gravity) के सिद्धांत का अविष्कार किया। वह अपनी बुद्धि और विवेक से नए तथ्य का दर्शन कर सका।

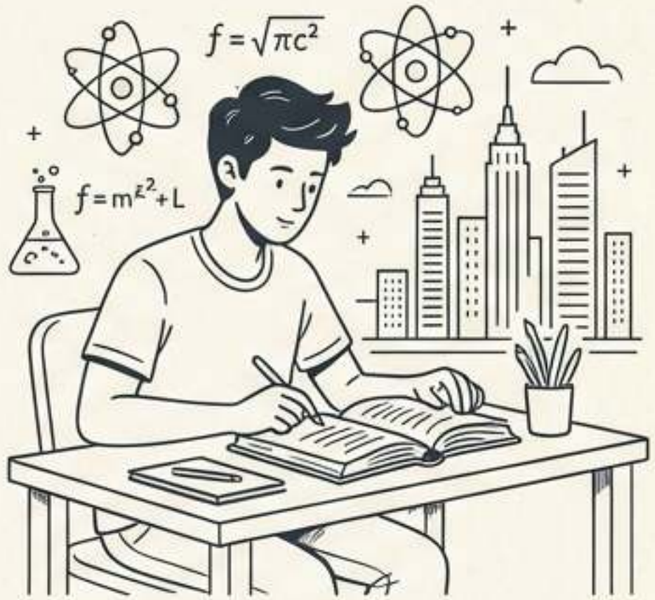

आज का विद्यार्थी (सभ्य मानव): वह न्यूटन से अधिक जानता है, लेकिन वह 'संस्कृत' नहीं है, केवल 'सभ्य' है क्योंकि उसे यह ज्ञान अनायास अपने पूर्वजों से मिला है।

NotebookLM

अर्जन बनाम सृजन

एक ‘संस्कृत’ व्यक्ति किसी नई चीज की खोज करता है, किंतु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास (effortlessly) प्राप्त हो जाती है।

संतान अपने पूर्वज की भांति ‘सभ्य’ भले ही बन जाए, ‘संस्कृत’ नहीं कहला सकती।

NotebookLM

संस्कृति की जननी: भौतिक आवश्यकता

आग के अविष्कार का कारण: पेट की ज्वाला (भूख)।

सुई-धागे के अविष्कार का कारण: शीतोष्ण (सर्दी-गर्मी) से बचने और शरीर सजाने की चाह।

लेकिन क्या केवल पेट भरना ही संस्कृति है?

NotebookLM

संस्कृति की जननी: ज्ञानपसा (जिज्ञासा)

कल्पना कीजिये उस आदमी की जिसका पेट भरा है और तन ढका है, फिर भी वह खुले आकाश के नीचे सो नहीं पाता।

“आखिर यह मोतियों भरा थाल (तारों भरा आकाश) क्या है?”

निठल्ला न बैठने की वृत्ति और ज्ञान की चाह भी संस्कृति है।

NotebookLM

संस्कृति की जननी: मानवीय करुणा

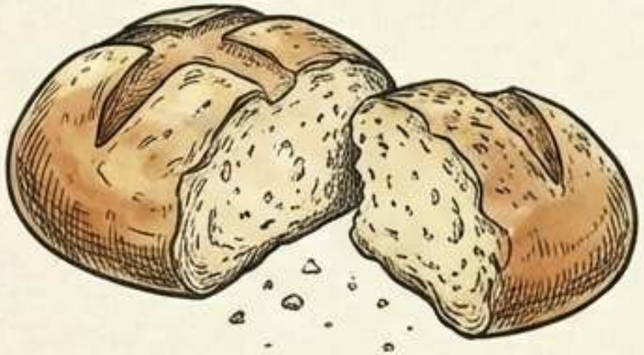

लेनिन: अपनी डेस्क में रखे डबल रोटी के सूखे टुकड़े स्वयं न खाकर दूसरों को खिलाना।

कार्ल मार्क्स: मजदूरों को सुखी देखने के लिए जीवन भर दुःख उठाना।

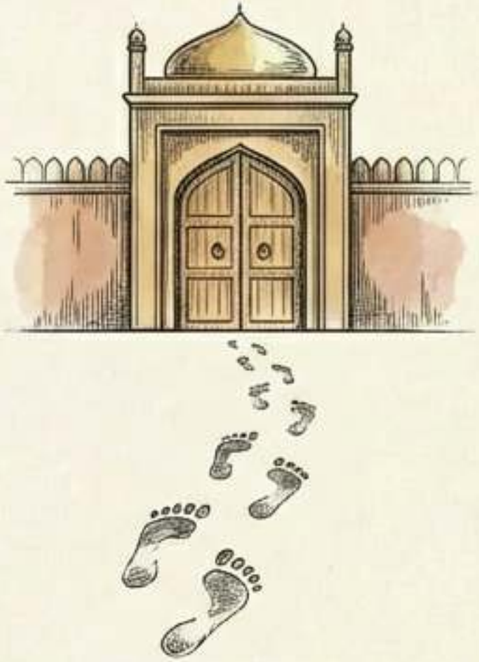

सिद्धार्थ (बुद्ध): मानवता को तृष्णा से मुक्त करने के लिए राज-पाट का त्याग करना।

NotebookLM

संस्कृति या असंस्कृति?

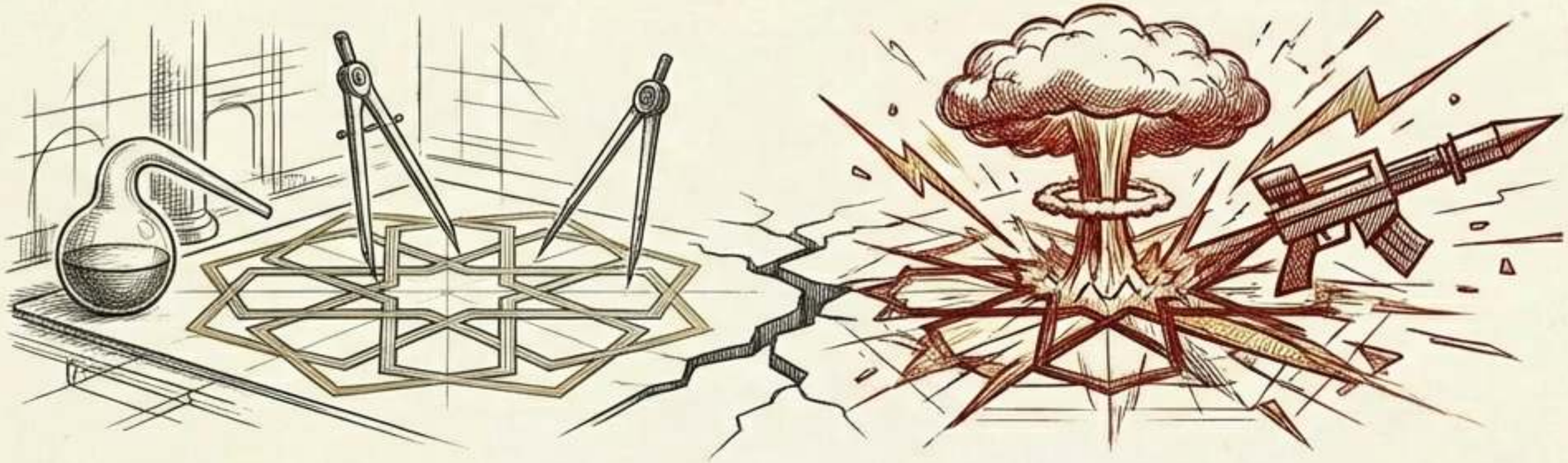

मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश (self-destruction) के साधनों का अविष्कार कराती है, उसे हम क्या कहें?

यह 'संस्कृति' नहीं, 'असंस्कृति' है। और ऐसी असंस्कृति का परिणाम 'सभ्यता' नहीं, 'असभ्यता' है।

NotebookLM

संस्कृति का धर्म: कल्याण

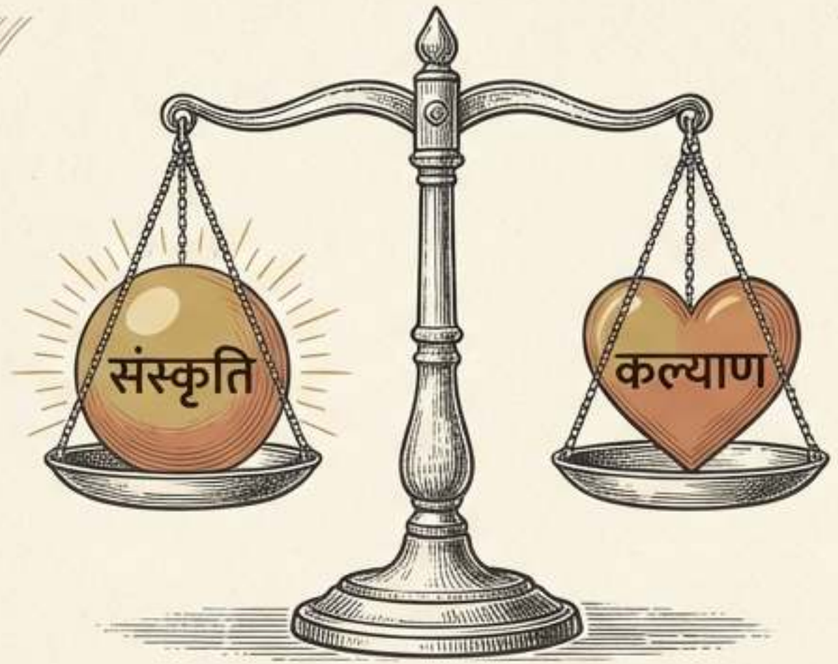

यदि संस्कृति का नाता 'कल्याण (welfare) की भावना से टूट जाएगा,
तो वह असंस्कृति होकर रहेगी।

जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी नहीं है, वह न सभ्यता है और न संस्कृति।

NotebookLM

संस्कृति का विभाजन असंभव

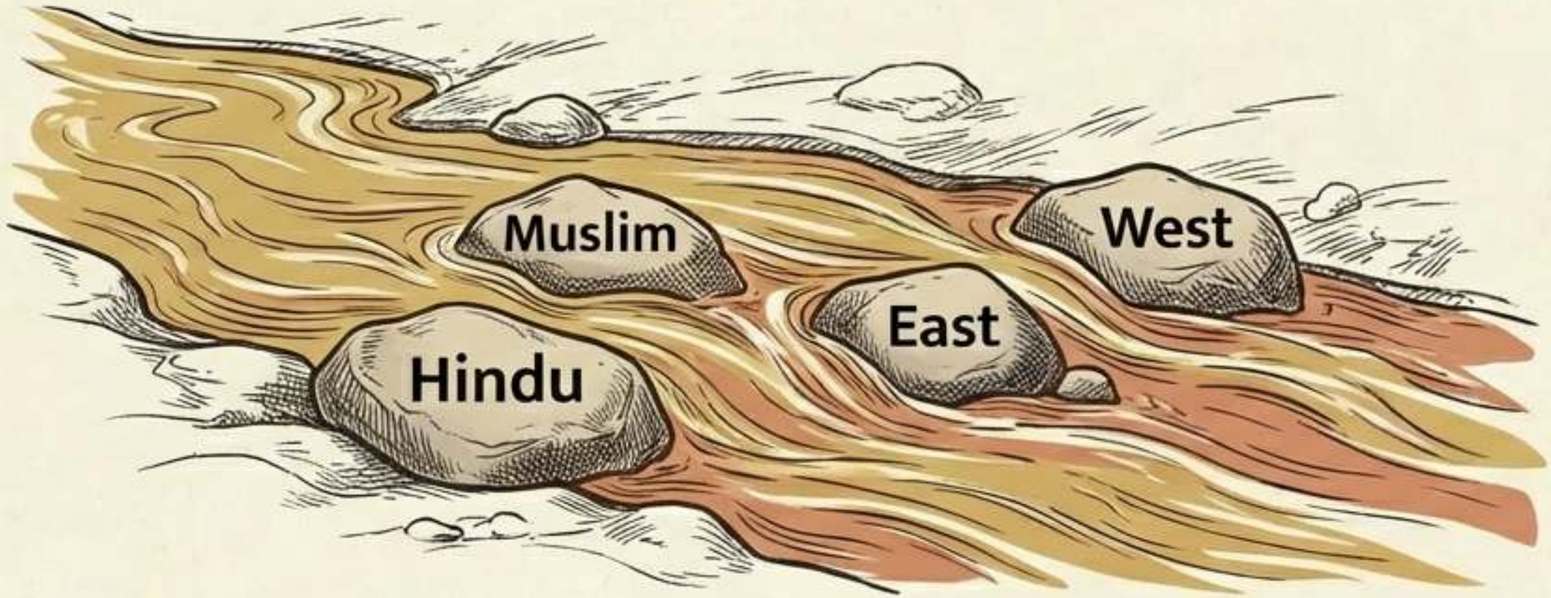

मानव संस्कृति एक अविभाज्य (indivisible) वस्तु है।
इसमें जितना अंश कल्याण का है, वह श्रेष्ठ है और स्थायी है।

क्षण-क्षण परिवर्तन होने वाले संसार में किसी एक चीज़ को पकड़ कर नहीं बैठा जा सकता।

NotebookLM

निष्कर्ष

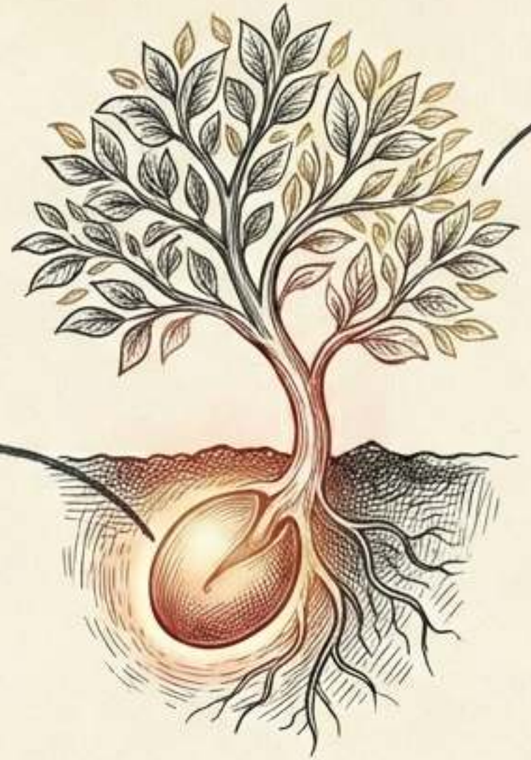

****सभ्यता (Civilization):***
जीवन जीने का तरीका
(Way of life)

****संस्कृति (Culture):***
सृजन की प्रेरणा
(Inspiration to create)

संस्कृति का कूड़ा-करकट (waste) नहीं, बल्कि उसका कल्याणकारी अंश ही रक्षणीय है।

NotebookLM